Class — T.D.C. Part I

Paper — II
तत्वमीमांसा
(Metaphysics)

Topic — अरस्तू — कारणता-सिद्धान्त
(Aristotle — Theory of Causation)

Dr. Poonam Sharma
Assistant Professor
Dept of Philosophy
R.N. College, Hajipur

अरस्तू — कारणता-सिद्धान्त
(Aristotle — Theory of Causation)

अरस्तू के दर्शन में तत्त्व-विचार सबसे महत्त्वपूर्ण है। उनके अनुसार परम तत्त्व द्रव्य है। यह एक है एवं उसके गुण अनेक होते हैं। अरस्तू के द्रव्य-विचार को अर्थपूर्ण ढंग से समझने के लिए उनके कारणता सिद्धान्त को समझना आवश्यक है। 'कारण' शब्द का प्रयोग उन्होंने अत्यन्त व्यापक रूप में किया है। उनके अनुसार कारण एवं प्रयोजन में भेद है। प्रयोजन कारण से अधिक व्यापक है, जिसमें कारण का अन्तर्भाव हो जाता है। अरस्तू के अनुसार कारण प्रयोजन का उपकरण है जिससे प्रयोजन अपना फल उत्पन्न करता है। उदाहरण के लिए, मृत्यु का कारण रोग या दुर्घटना हो सकता है, किन्तु इससे मृत्यु की व्याख्या नहीं हो पाती अर्थात् संसार में मृत्यु क्यों होती है — यह अज्ञात रहता है। कारण के द्वारा केवल यही पता चलता है कि मृत्यु कैसे हुई। प्रयोजन सुनिश्चित होता है, इसलिए इसके द्वारा 'क्यों' की व्याख्या होती है।

अरस्तू के कारणता-सिद्धान्त में कारण एवं प्रयोजन दोनों सम्मिलित हैं। उनका कारणता सम्बन्धी यह विचार आधुनिक विज्ञान की अपेक्षा अधिक व्यापक है। अरस्तू के अनुसार कारण चार प्रकार के होते हैं —

(1) उपादान कारण (Material Cause)
(2) निमित्त कारण (Efficient Cause)
(3) स्वरूप कारण (Formal Cause) एवं
(4) लक्ष्य कारण (Final Cause)

किसी वस्तु के निर्माण के लिए इन चारो कारणों की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, मूर्ति, घड़ा, वस्त्र, कुर्सी आदि किसी वस्तु की रचना करनी हो, तो ये चारों कारण उसमें निहित होते हैं।

(1) उपादान कारण — किसी वस्तु या के निर्माण के लिए उपादान या द्रव्य की आवश्यकता होती है। यही उस वस्तु का उपादान कारण कहलाता है। उदाहरण के लिए, मिट्टी की मूर्ति बनाने में मिट्टी ही उसका उपादान कारण है। इसीप्रकार घड़े के निर्माण में मिट्टी, वस्त्र-निर्माण के लिए धागा उसका उपादान कारण है। उपादान कारण को 'समवायि कारण' भी कहते हैं।

(2) निमित्त कारण — यह किसी घटना या कार्य का 'शक्त कारण' है जिससे गति या परिवर्तन सम्भव होता है। निमित्त कारण वह ऊर्जा या शक्ति है जो परिवर्तन को सम्भव बनाती है। गति का तात्पर्य केवल स्थान-परिवर्तन ही नहीं, वरन् उसमें स्वभाव-परिवर्तन का भी अन्तर्भाव हो जाता है। जैसे — घड़े के निर्माण में कुम्भकार ही उसका निमित्त कारण है। कुम्भकार की गति या ऊर्जा से ही मिट्टी का परिवर्तन घड़ा के रूप में होता है।

(3) स्वरूप कारण — स्वरूप कारण से अरस्तू का तात्पर्य किसी वस्तु के 'तत्व' या 'सार' से है, जो उस वस्तु की परिभाषा के द्वारा अभिव्यक्त होता है। परिभाषा प्रत्यय का ही स्पष्टीकरण है। इसप्रकार किसी वस्तु का स्वरूप कारण उसका प्रत्यय या विज्ञान है। यहाँ अरस्तू के दर्शन में प्लेटो के प्रत्यय या विज्ञान एक नये सन्दर्भ में स्वरूप कारण के रूप में प्रकट होते हैं। जैसे — घड़ा बनने के पूर्व कुम्भकार के मस्तिष्क में उस घड़े का जो आदर्श रूप है, वही स्वरूप कारण है।

(4) लक्ष्य काल — लक्ष्य काल वह साध्य या प्रयोजन है, जिसकी सिद्धि के लिए समस्त व्यापार प्रयत्नशील होते साध्य या प्रयोजन ही उपादान एवं निमित्त कारणों को गति या निर्देशन प्रदान करता है जिससे कोई वस्तु अपनी पूर्णावस्था को प्राप्त होती है। जैसे - 'पूर्ण घड़ा' निर्माण का परिणाम है, वही लक्ष्य-काल है। यही कुम्भ का लक्ष्य है।

इसप्रकार अरस्तू के कारणता-सिद्धान्त से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने 'कारण' शब्द का प्रयोग बहुत विस्तृत अर्थ में किया है, जिसमें उपादान एवं निमित्त कारणों के अतिरिक्त स्वरूप तथा लक्ष्य कारणों का भी समावेश हो जाता है। इन चार प्रकार के कारणों का वर्णन करने के पश्चात् अरस्तू ने उनको केवल दो रूपों में वर्गित करने का प्रयास किया है जो क्रमशः 'द्रव्य' एवं 'स्वरूप' हैं। इस घटन का रहस्य यह है कि स्वरूप, निमित्त एवं लक्ष्य कारण — ये तीनों अलग-अलग नहीं हैं, अपितु ये स्वरूप के ही रूपान्तरण मात्र हैं। इसके लिए अरस्तू ने सर्वप्रथम स्वरूप एवं लक्ष्य कारण का भेद समाप्त किया। उनके अनुसार लक्ष्य-काल स्वरूप कारण का ही मूर्त रूप या वास्तविकीकरण है। स्वरूप कारण किसी वस्तु का काल्पनिक रूप है तथा लक्ष्य कारण उसी का वास्तविक रूप है। इसप्रकार स्वरूप कारण एवं लक्ष्य कारण में कोई भिन्नता नहीं है।

अरस्तू ने पुनः यह बतलाया है कि निमित्त काल एवं लक्ष्य काल अन्ततः एक ही होते हैं। निमित्त काल परिणाम का साधन है तथा लक्ष्य काल उसी परिणाम का साध्य है। उनके अनुसार जो परिणाम का कारण होता है, वही अन्त में उसका लक्ष्य भी होता है। इसलिए लक्ष्य एवं निमित्त काल में भी

कोई भेद नहीं होता। अरस्तू का कहना है कि मानव के द्वारा निर्माण किये गये कार्य में निमित्त कारण एवं लक्ष्य कारण का द्वैत बना रहता है, किन्तु प्रकृति के विकास के क्रम में दोनों एक ही होते हैं। निमित्त एवं लक्ष्य कारण प्रकृति के विकास-क्रम में स्वरूप कारण के ही अन्तर्गत रहते हैं। इसप्रकार अरस्तू के कारणता-सिद्धान्त में केवल दो ही रूप मौलिक हैं — (1) द्रव्य (Matter) तथा (2) स्वरूप (Form)। उनके अनुसार द्रव्य एवं स्वरूप में किसी का भी अन्तर्भाव दूसरे में नहीं किया जा सकता। सम्पूर्ण विश्व की व्याख्या इन्हीं दो कारणों के आधार पर की जा सकती है।

——— × ——— × ———